वी.यू. के पाठ्यक्रमों में पर्यावरण शिक्षा भी शामिल होगी

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर में माननीय कुलपति डॉ. प्रयाग दत्त की अध्यक्षता में एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. सदाचारी सिंह तोमर, पूर्व असिस्टेंट डायरेक्टर जनरल, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं वर्तमान में राष्ट्रीय समन्वयक पर्यावरण शिक्षा, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली तथा विश्वविद्यालय के अधिकारीगण उपस्थित थे। इसमें पशुचिकित्सा एवं पशुपालन तथा संबंधित विषयों में पर्यावरण शिक्षा को भी शामिल करने हेतु चर्चा की गई।

पशु उत्पादन में पर्यावरण का प्रभाव डॉ. जुयाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि पशुपालन के समुचित विकास हेतु पर्यावरण का बहुत अधिक महत्व है। पर्यावरण असंतुलन का पशु उत्पादन पर विपरीत प्रभाव हो रहा है एवं उत्पादन में कमी हो रही है जिससे पशुपालकों को आर्थिक क्षति होती है। विपरीत प्रभाव को कैसे कम किया जाये इस हेतु डिग्री में पर्यावरण विज्ञान का एक अनिवार्य विषय शामिल होना चाहिये।

मृत पशुओं एवं गोबर का उचित निस्तावरण आवश्यक

पशुओं से मीथेन गैस का उत्सर्जन होता है जो पर्यावरण के लिये घातक है। मृत पशुओं एवं गोरि की भी उचित निस्तावरण अति आवश्यक है।

वी.यू. का मनोनयन

देश की शिक्षा में नये विकल्प प्रदान करने हेतु 24 जुलाई 2007 को शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का गठन किया गया। इसका लक्ष्य है देश की शिक्षा को भारतीय संस्कृति, प्रकृति एवं प्रगति के अनुरूप बनाना। इससे छात्रों के समग्र विकास के माध्यम से देश का समुचित विकास होगा। इसी उदेद्श्य को ध्यान में रखते हुये प्रत्येक क्षेत्र जैसे इंजीनियरिंग, एग्रीकल्चर, मेडिकल, वेटनरी आदि में एक-एक संस्था का चयन पाठ्यक्रम तैयार करने हेतु किया गया है। पशुचिकित्सा एवं पशुपालन एवं संबंधित विषयों में पाठ्यक्रम तैयार करने हेतु राष्ट्रीय स्तर पर इस विश्वविद्यालय का चयन हुआ है जो संस्कारधानी हेतु गौरव का विषय है।

कार्यशाला का आयोजन

गहन विचार विमर्श हेतु एक कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय में 27 अक्टूबर को किया जायेगा। जिससे देश के पशुचिकित्सा, पशुपालन तथा संबंधित विषयों के विशेषज्ञ उपस्थित रहेंगे। कार्यशाला के मुख्य संरक्षक डॉ. प्रयाग दत्त जुयाल तथा आयोजन सचिव, एस.के जोशी एवं डॉ. आर.के. शर्मा होंगे।

सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी
ना.दे.प.चि.वि.वि.
जबलपुर